भजन

तर्ज–बहारों फूल बरसाओ

सजा दो बाग तिलसम का मेरी रूहो ने आना है

1–न रहे कोई कसर बाकी शानो और गुमानो में
खुशबू ऐसी बिखराओ हो काबिल मन लुभाने में
बेहोशी ऐसी छा जाए भुलाए निज ठिकाना है

2–खिंचावट सबको ऐसी हो बेसुध हो के फंस जाए
जाल माया का ऐसा हो के चक्कर मे उलझ जायें
निकलने की भी सुध ना हो ऐसा परपचं रचाना है

3–मेरी वानी से अनभिज्ञ हो पूजा झूठी में खो जाए
दिखाना कष्ट सब भारी मगर तन से ना छू जाए
उसी उलझन में रह जाएँ ऐसा तिलसम रचाना है

4–संभालूगां यह तन अपने दिखा कर खेल मायाका
सभी इच्छाएं पूरी कर तभी घर ले के जाऊंगा
अखंड दुनिया को करके ही तभी घर लौट जाना है